1. ध्वनि (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')

Based on NCERT Syllabus

1. कवि को ऐसा विश्वास क्यों है कि उसका अंत अभी नहीं होगा ?

Ans: कवि को निम्नलिखित कारणों से ऐसा लगता है कि उसका अंत अभी नहीं होगा —

(क) कवि का आत्मविश्वास से भरा हुआ है।

(ख) कवि के उपवन में वसंत का आगमन हुआ है।

(ग) वह अपने स्वप्न भरे हाथों से कलियों को जगाना चाहता है और उन्हें अपने जीवन - अमृत से सींचकर हरा - भरा करना चाहता है।

(2) कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए क्या करना चाहता है ?

Ans: कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए इन पर अपना हाथ फेरकर उन्हें जगाना उनको तुरंत प्राणवान आभावान व पुष्पित करना चाहते हैं। कवि निंद पड़े युवकों को प्रेरित करके उनमें नए उत्कर्ष के स्वप्न जगाना चाहते हैं।

3. वसंत को ऋतुराज क्यों कहा जाता है? आपस में चर्चा करें।

Ans:- वसंत को ऋतुराज इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह सभी ऋतुओं का राजा होता है। इस ऋतु में सर्दी पूरे यौवन पर होती है। इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है। मौसम सुहावना हो जाता है। इस समय पंचतत्व अपना प्रकोप छोड़कर सुहावने रूप में प्रकट होते हैं। पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं। सरसों के फूल ऋतुराज के आगमन की घोषणा करते हैं।

4. ऋतु परिवर्तन का जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस कथन की पुष्टी आप किन-किन बातों से कर सकते हैं?

Ans:- (क) खान-पान :- हर ऋतु के अपने खान-पान होते हैं। लोग उन ऋतुओं के अनुसार ही अपने लिए भोजन प्रबंध करते हैं।

Scanned with CamScanner

(ख) पहनावा :- हर ऋतु मे अलग-अलग प्रकार के परिधानों का प्रयोग किया जाता है। ग्रीष्म ऋतु मे सूती वस्त्रों का अधिक प्रयोग करते है।

(ग) त्योहार :- विभिन्न ऋतुओं के अनुसार इन दिनों मे पड़ने वाले त्योहार अलग होते है। ये त्योहार लोगों के जीवन के गहराई से प्रभावित करते है।

5.) कवि ध्वनि कविता के माध्यम से क्या संदेश देना चाहते है?

Ans. कवि 'निराला' जी इस कविता के माध्यम से सोई हुई शक्तियो व प्रतिभाओं को जगाकर एक सुंदर एवं सुखद भविष्य का निर्माण करने का संदेश देना चाहते है।

6.) मेरे वन मे मृदुल वसंत से कवि का क्या तात्पर्य है?

Ans. कवि का तात्पर्य है कि

Scanned with CamScanner

उनके जीवनरूपी वन में खुशियों और उन्नति के कोमल वसंत रूपी ऋतुओं ने पदार्पण किया है, जो कवि का जीवन आनंदित करते हैं।

3.) कवि ने कविता में कैसी भाषा का प्रयोग किया है?

Ans:- कवि ने कविता में तत्सम शब्द का प्रयोग किया है।

Scanned with CamScanner

२. लाख की चूड़ियाँ (कामतानाथ)

1. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था, बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर बदलू काका क्यों कहता है?

उत्तर: लेखक के मामा के गाँव में लाख की चूड़ियाँ बनाने वाला कारीगर बदलू रहा करता था। जो लाख की बहुत सुंदर चूड़ियाँ बनाता था, परंतु लेखक के लिए वह लाख की रंगी-बिरंगी सुंदर गोलियाँ बनाकर दिया करता था, जिसके कारण लेखक सदैव बदलू के पास जाता था। यही कारण है कि लेखक को अपने मामा का गाँव भाता था।

२. वस्तु-विनिमय क्या है?

उत्तर: प्राचीनकाल में न रुपये-पैसों का प्रचलन था और न अन्य सर्वमान्य मानक रूप ही प्रचलित था उस समय भी लोग अपनी आवश्यकता की पूर्ति एक-दूसरे से ले देकर करते थे, उस समय लोग

एक वस्तु को देकर दूसरी वस्तु ले लिया करते थे, इसी वस्तु विनिमय कहा जाता है।

3. बदलू के मन में ऐसी कौन-सी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी?

Ans:- बदलू की मन की व्यथा :
बदलू चूड़ी बनाने वाला एक कुशल कारीगर था। उसकी बनाई लाख की चुड़िया गाँव की सभी औरते पहनती थी। उस समय यदि वह गाँव की किसी औरत को काँच की चुड़ियाँ पहनी देखता तो चिढ़ता और दो-चार बातें सुना भी देता।
उसके गाँव की महिलाओं ने मशीनों से बनी काँच की चुड़िया पहनना शुरु कर दिया उसकी बनाई चुड़ियों की गाँव में खद्द कम हो गई। उसका काम बंद होगया।

Scanned with CamScanner

4. मशीनी युग से बदले के जीवन में क्या बदलाव आए –

Ans: (क) मशीनी युग के कारण उनके गांव की महिलाओं की कलाइयों पर कांच की चूड़ियां सुशोभित होने लगी इससे एक कुशल कारीगर उपेक्षित होकर रह गया।

(ख) इस पेशे होने वाली आय समाप्त हो गई।

(ग) शादी - ब्याह जैसे पवित्र मौके पर सुहाग के जोड़े के रूप में उसकी बनाई चूड़ियों को विशेष महत्व दिया जाता था, किंतु उसका स्थान कांच की चूड़ियों ने ले लिया था।

5. घर में मेहमान के आने पर उसका अतिथि सत्कार कैसे करेंगे?

Ans: घर में आए मेहमान को मैं सादर प्रणाम करूंगा। उनका यथोचित परिचय जानकर मैं उन्हें ड्राइंग रूम बिठाऊंगा।

उन्हें अखबार दूँगा या टेलीविजन चालू करूँगा. जब तक उनका ध्यान इसमें लगेगा, मैं उनको पानी लाकर दूँगा। उनके पिताजी के घर पर होने या न होने की बात करूँगा। उनके लिए चाय (नाश्ता) ले आऊँगा। इसके बाद उनके आने का आदेश पूछूँगा।

3. बस की यात्रा
(हरिशंकर परसाई)

1. "मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा" लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गई?

उत्तर:- लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा इसलिए जग गई क्योंकि -

(क) बस के टायर बिलकुल खराब हो रहे थे। वे कहीं पर कभी भी फट सकते थे। तेज गति से चलती बस का टायर फटने से बस पलट सकती थी। इससे अन्य यात्रियों के साथ-साथ इनकी जान को खतरा था, पर वे जान को जोखिम में डालकर यात्रा कर रहे थे।

(ख) ऐसी उत्सर्ग की भावना उनके अंदर है वैसी अन्यत्र दुर्लभ थी।

(ग) उनके साहस और बलिदान की भावना के हिसाब से उन्हें क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए।

2) लोगों ने सलाह दी समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते" लोगों ने यह सलाह क्यों दी ?

Ans लोगों ने लेखक को यह सलाह इसलिए दी क्योंकि वे जानते थे कि बस की हालत बहुत खराब है तथा इस का कोई भरोसा नहीं है कि यह कब और कहाँ रुक जाए. शाम बीतते ही रात हो जाती है और रात रास्ते में कहा बितानी पड़ जाए, कुछ पता नहीं रहता। उनके अनुसार यह बस डाकिन की तरह है।

3. ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं।" लेखक को ऐसा क्यों लगा ?

Ans लेखक को ऐसा इसलिए लगा क्योंकि जब बस को स्टार्ट किया गया, तब वह जोर की आवाज करती है, और

हिलाती है, वास्तव में बस का इंजन हिलना चाहिए था, पर खराब होने के कारण पूरी बस ही हिल रही थी. हिलना तथा शोर की आवाज होने पर लगता था कि पूरी बस ही इंजन बन गई।

4. "गजब हो गया। ऐसा बस अपने आप चलती है" लेखक को सुनकर हैरानी क्यों हुई?

लेखक को जब उस बस में बैठे हुए मन ही मन बस के चलने पर आशंका हुई तो उस आशंका को मिटाने लिए बस के हिस्सेदार ने बस की प्रशंसा बढ़ा-चढ़ाकर की। लेखक को संदेह था कि बस कैसे चलेगी, बस की हिस्सेदार ने इतने अभिमान से कहा, अपने आप चलेगी क्यों नहीं चलेगी, अभी चलेगी। पर लेखक ने विश्वास नहीं किया. अपने आप कैसे चलेगी।

5. रुकी बस की हालत देखकर लेखक को क्या लग रहा था?

Ans:- लेखक को क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी कि जैसे कोई वृद्धा थक कर बैठ गई हो। लेखक को ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी।

6. बस की पेट्रोल की टंकी में छेद हो जाने पर ड्राइवर ने क्या किया?

Ans:- बस की पेट्रोल की टंकी में छेद हो जाने पर ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा तथा नली की सहायता से उसे इंजन में भेजने लगा।

4. दीवानों की हस्ती

भगवतीचरण वर्मा

1. कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को आँसू बनकर बह जाना क्यों कहा है?

Ans:- कवि अपने आने का 'उल्लास' कहता है कि किसी भी नई जगह पर आने से खुशी मिलती है तथा स्थान को छोड़कर जाते समय दुख होता है, और इसलिए आँखों से आँसू निकल जाते हैं। जिससे वे अपना दुख भूल जाते हैं तो वह यह दुख लेकर जाता है कि ये खुशियाँ हमेशा के लिए नहीं हैं।

2. 'दीवानों की हस्ती' इस कविता में कौन सी बात आपको अच्छी लगी?

Ans:- (क) सुख - दुख को समान भाव से अपनाने की बात की गई है।

(ख) कविता में प्यार लुटाकर, दूसरों के दुख दूर करने की बात कही गई है।

(ग) कविता में उल्लासपूर्वक मस्ती का जीवन जीने का संदेश दिया गया है।

Scanned with CamScanner

3. कवि ने कविता में दीवानों की क्या विशेषता बताई है?

Ans: कवि ने कविता में यह बताया है कि दीवाने मनमौजी स्वभाव के होते हैं। वे एक जगह टिक कर नहीं रहते हैं। वह लोगों के सुख-दुख के साथी होते हैं। गरीबों के लिए प्यार लुटाते हैं। दीवाने मान-अपमान भलाई-बुराई, अपने-पराये की भावना से ऊपर उठ जाते हैं।

2. इस कविता में जीवन की प्रति कौन-सा दृष्टिकोण झलकता है?

Ans: इस कविता में जीवन को पूरी मस्ती के साथ जीने का दृष्टिकोण झलकता है। हमें स्वच्छंद जीवन में जीना चाहिए। किसी के बंधन में बंधकर जीना ठीक नहीं है। गरीबों की प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

1. 'दीवानों की हस्ती' कविता में कवि ने किन व्यक्तियों को दीवाने कहकर सम्बोधित किया है?

Ans:- कवि ने उन व्यक्तियों को दीवाने कहा जो मौजमस्ती से जीवन व्यतीत करते हैं तथा दूसरे के सुख - दुख को समान भाव से अनुभव करते हैं।

Scanned with CamScanner

भाषा - उच्चरित ध्वनि-संकेतो की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति अथवा जिसकी मदद से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते हैं, उस यादृच्छिक, रूढ़ ध्वनि-संकेत की प्रणाली को भाषा कहते हैं।

भाषा तीन प्रकार के होते हैं-

(i) भाषा ध्वनि-संकेत - सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा ध्वनि-संकेत कहते हैं। जैसे - रेलगाड़ी का गार्ड हरी झंडी दिखाकर यह भाव व्यक्त करता है कि रेलगाड़ी अब खुलनेवाली है।

(ii) लिखित भाषा - जिस शब्द को लिखकर किसी को समझाने या बताने का प्रयास किया जाता है, उसे लिखित भाषा कहते हैं। जैसे - कुत्ता, हाथी, बिल्ली आदि।

(iii) मौखिक भाषा - जिन शब्दो को हम बोलकर किसी को समझाने का प्रयास करते हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। जैसे - बच्चा, बूढ़ा, जवान आदि।

अनुनासिक (ँ) - ऐसे स्वरों का उच्चारण करते समय नाक से कम तथा मुँह से अधिक ध्वनि निकलती है, उसे अनुनासिक कहते हैं। जैसे - गाँव, दाँत, आगन आदि।

अनुस्वार (ं) - यह स्वर के बाद आनेवाला व्यंजन है, जिनका उच्चारण करते समय नाक से अधिक तथा मुँह से कम ध्वनि निकलती है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे - अंश, हंस, अंगूर आदि।

निरनुनासिक - ऐसा स्वर वर्ण जिनका उच्चारण केवल मुँह द्वारा निकली गई ध्वनि से होता है, उसे निरनुनासिक कहते हैं। जैसे - इधर, उधर, आप, अपना, घर इत्यादि।

वर्ण

वर्ण वह मूल ध्वनि है जिनका खंड या टुकड़ा नहीं किया जा सकता है। जैसे - अ, आ, इ, र इत्यादि

वर्ण दो प्रकार के होते हैं -

(i) स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण स्वतः होता है, उसे स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे, अ, आ, ...

स्वर वर्ण के भेद -

(i) ह्रस्व स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने मे अति अल्प समय लगता है, उसे ह्रस्व स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - अ, इ, उ, ऋ।

(ii) दीर्घ स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने मे ह्रस्व स्वर वर्ण की अपेक्षा दोगुना समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(iii) प्लुत स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने मे ह्रस्व स्वर की अपेक्षा तीन गुना समय लगता है, उसे प्लुत स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - ओऽम। ॐ

व्यंजन वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने मे स्वर वर्ण की मदद ली जाती है, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं। जैसे - क --- ह।

व्यंजन वर्ण के भेद -

(i) स्पर्श व्यंजन - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण कंठ, तालु, मूर्द्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श करने से होता है, उसे स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जैसे - क वर्ग से प वर्ग तक।

(ii) अंतःस्थ व्यंजन - वैसे वर्ण जिनका उच्चारण जीभ, तालु, दांत और ओष्ठ के स्पर्श से होता है, उसे अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। अंतःस्थ व्यंजन को 'अर्द्धस्वर' भी कहा जाता है। जैसे - य, र, ल, व।

Scanned with CamScanner

(iii) ऊष्म व्यंजन – वैसे वर्ण जिनका उच्चारण हमारे शरीर के अंदर एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्म वायु से होता है, उसे ऊष्म व्यंजन कहते हैं। जैसे - श, ष, स, ह ।

वायु प्रक्षेप की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं —

(i) अल्पप्राण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास पहले से अल्प मात्रा में निकले तथा जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण तथा अंत: स्थ व्यंजन अल्पप्राण व्यंजन हैं।

(ii) महाप्राण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास अधिक मात्रा में तथा हकार जैसी ध्वनि विशेष रूप से निकलती है, उसे महाप्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का दूसरा एवं चौथा वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन वर्ण महाप्राण व्यंजन हैं।

नाद की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं –

(i) अघोष वर्ण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत नहीं होती हैं, उसे अघोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला एवं दूसरा वर्ण तथा श, ष, स ।

(ii) सघोष वर्ण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करते में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत होती है, उसे सघोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण, सभी स्वर वर्ण, य, र, ल, व और ह ।

विसर्ग (:) अनुस्वार की तरह प्रयोग होनेवाला यह एक व्यंजन वर्ण है तथा इसका उच्चारण 'ह' की तरह होता है। हिन्दी में अब इसका अभाव होता जा रहा है, लेकिन तत्सम शब्दों के प्रयोग में इसका आज भी उपयोग होता है। जैसे - पय: पान, प्रात: काल, अत: इत्यादि।

बलाघात (स्वराघात) – बोलते समय अर्थ या उच्चारण की स्पष्टता के लिए जब हम किसी अक्षर पर विशेष बल देते हैं, तो इस क्रिया का बलाघात या स्वराघात कहा जाता है। जैसे - विष्णु, इन्द्र, राम, इत्यादि।

संगम – उच्चारण करते समय दो ध्वनियों के बिच जो विराम आता है, उसे संगम कहते हैं। जैसे - तुम्हारे, उत्पल इत्यादि ।

अनुतान – बोलने के क्रम में जो सुर में उतार-चढ़ाव होता है, उसे अनुतान या सुरलहर कहते हैं। जैसे - कौन करेगा, तथा करेगा कौन ?

लिपि – वर्णों को लिखने के लिए जिन सांकेतिक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उसे लिपि कहते हैं। जैसे - ा, ि, ी, ...

ध्वनि – भाषा की सबसे छोटी इकाई को ध्वनि कहते हैं।

वर्तनी – वर्णों/शब्दों को ठीक ढंग से लिखने की रीति को वर्तनी कहते हैं।

अयोगवाह - वैसा वर्ण जो न तो स्वर है न व्यंजन फिर भी वह ध्वनि का वहन करता है, उसे अयोगवाह कहते हैं। जैसे - अं, अः ।

हल् - व्यंजन वर्णों के नीचे जब एक तिरछी रेखा (्) लगाई जाती है, उसे हल् कहते हैं। हल् लगाने का अर्थ है कि व्यंजन में स्वरवर्ण का बिलकुल अभाव है या व्यंजन आधा है। जैसे - क्, ख्, ---

वर्ण-विच्छेद - वर्णों को अलग करने की रीति को वर्ण-विच्छेद कहते हैं। जैसे - क = क्+अ ।

पंचमाक्षर - अनुनासिक वर्णों को ही पंचमाक्षर वर्ण कहते हैं। जैसे - ङ, ञ, ण, न, म ।

संयुक्ताक्षर - वैसा वर्ण जिसमें दो या दो से अधिक व्यंजन वर्णों का मेल होता है, उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं। जैसे, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ।

उच्चारण स्थान का विवरण -

स्थान	वर्ण	नाम
कंठ -	अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	- कंठ्य वर्ण
तालु -	इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श्	- तालव्य वर्ण
मूर्द्धा -	ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष्	- मूर्द्धन्य वर्ण
दंत -	त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्	- दंत्य वर्ण
ओष्ठ -	उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्	- ओष्ठ्य वर्ण
कंठ-तालु -	ए, ऐ	- कंठ-तालव्य वर्ण
कंठ-ओष्ठ -	ओ, औ	- कंठोष्ठ्य वर्ण
दंतोष्ठ -	व्	- दंतोष्ठ्य वर्ण
नासिका -	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	- नासिक्य वर्ण

Scanned with CamScanner

वर्ग - VII, VIII, IX, X

व्याकरण

(1)

संज्ञा

संज्ञा - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव, गुण, दोष, मात्रा, अनुभव आदि को संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, पुस्तक, मेला, लज्जा इत्यादि।

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं -

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष या खास व्यक्ति, स्थान, नाम का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, रामायण, हिमालय आदि।

(ii) जातिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति भर का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- पहाड़, गाय आदि।

(iii) समूहवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी झुंड, समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सेना, वर्ग, सभा, गुच्छा इत्यादि।

(iv) द्रव्यवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी द्रव्य या धातु, वस्तु की परिमाण/मात्रा का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - सोना, चाँदी, घी, तेल इत्यादि।

(v) भाववाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु के गुण, दोष, धर्म, स्वभाव इत्यादि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- बुढ़ापा, ईमानदारी, महत्ता इत्यादि।

(2)

सर्वनाम

सर्वनाम - संज्ञाओं अथवा नामों के बदले जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, वह, तुम, आप, जो इत्यादि।

सर्वनाम के भेद -

(i) पुरुषवाचक - बोलने वाले, सुननेवाले तथा जिसके विषय में जो कुछ कहा या सुना जाये, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, हम, तुम, वह इत्यादि।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद -

(i) उत्तम पुरुष - वक्ता/बोलनेवाले को उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे- मैं, हम, मैंने, मुझको इत्यादि।

(ii) मध्यम पुरुष - सुननेवाले को मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे- तुम, आप, तू, तुमलोग इत्यादि।

(iii) अन्यपुरुष - जिसके विषय में कुछ कहा या सुना जाये, उसे अन्य पुरुष कहते हैं। जैसे- वह, वेलोग, यह, वे, ये इत्यादि।

(ii) निश्चयवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति या भाव के निश्चय होने का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - यह, वह, इत्यादि।

Scanned with CamScanner

(g) अनिश्चय वाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव के अनिश्चय होने का बोध होता है, उसे अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - कोई, कुछ आदि।

(h) संबंधवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी संज्ञा के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - वह कौन है, जो दरवाजे पर खड़ा है।

(i) निजवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से स्वयं या निज का बोध होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - मैं यह काम स्वयं ही कर लूँगा।

(j) प्रश्नवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से प्रश्न पूछने या करने का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - कौन, क्या, कहाँ, क्यों इत्यादि।

विशेषण

विशेषण - संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। जैसे - काला, मोटा, छोटा, कमजोर इत्यादि।

विशेषण के भेद —

(i) गुणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के गुण, दोष, स्वभाव, अवस्था का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - काला, मोटा, गोल, भूखा इत्यादि।

(ii) परिमाणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी वस्तु की माप-तौल या परिमाण/मात्रा का बोध होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - थोड़ा, कम इत्यादि।

(iii) संख्यावाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु की संख्या का बोध होता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - तीन पुस्तकें, चार कलम, दो आदमी इत्यादि।

(iv) सार्वनामिक विशेषण - किसी संज्ञा के पहले आनेवाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे - यह पुस्तक अच्छी है।

Scanned with CamScanner

क्रिया

क्रिया – जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे- वह पढ़ता है। मैं सोता हूँ।

क्रिया के भेद –

(i) सकर्मक क्रिया – जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म रहता है तथा क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- राम पुस्तक पढ़ता है।

(ii) अकर्मक क्रिया – जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म नहीं रहता तथा क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे – राम पढ़ता है।

सहायक क्रिया –

मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने में जो क्रियाएँ सहायता करती हैं, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। जैसे – है, था, रहे, गा रहा इत्यादि।

प्रेरणार्थक क्रिया –

जिन क्रियाओं से यह पता चलता है कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे से करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे – राम, मोहन से काम करवाता है।

वाच्य

क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है तथा इनमें किसके अनुसार क्रिया के पुरुष, लिंग, वचन आदि आये हैं।

वाच्य के भेद –

(i) कर्तृवाच्य – क्रिया के उस रूपांतर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो। जैसे- लड़का आम खाता है। मोहन पुस्तक पढ़ता है।

(ii) कर्मवाच्य – क्रिया के उस रूपांतर को कर्मवाच्य कहते हैं, जहाँ वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध होता है। जैसे – पुस्तक पढ़ी जाती है।

(iii) भाववाच्य – क्रिया के उस रूपांतर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में भाव की प्रधानता रहती है। जैसे – धूप में चला नहीं जाता।

प्रविशेषण –

विशेषण की विशेषता बतलाने वाले शब्द को प्रविशेषण कहते हैं। जैसे- राम बहुत तेज विद्यार्थी है। यहाँ 'तेज' विशेषण है और उसका भी विशेषण है 'बहुत'।

Scanned with CamScanner

लिंग

संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव की जाति (स्त्री या पुरुष) का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। जैसे - राजा, घोड़ा, लड़का, कुता - कुतिया इत्यादि।

लिंग के भेद -

(i) पुँलिंग - जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुँलिंग कहते हैं। जैसे - बालक, खटमल आदि।

(ii) स्त्रीलिंग - जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। जैसे - रानी, घोड़ी, लड़की इत्यादि।

पुँलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -

(क) अकारांत तत्सम शब्द पुँलिंग होते हैं। जैसे - धन, जन, वन, जल

(ख) हिन्दी के आकारांत शब्द पुँलिंग होते हैं। जैसे - लड़का, पटाखा इत्यादि

नोट - उक्त नियम के कुछ अपवाद भी हैं।

स्त्रीलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -

आकारांत, इकारांत, ईकारांत, ऊकारांत तत्सम शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - दया, माया, आज्ञा, घोषणा, सूचना, ईर्ष्या, इच्छा इत्यादि। मूर्ति, नारी, गोपी, मृत्यु, वस्तु, ऋतु, वायु आदि।

लिंग-निर्णय के सामान्य नियम

(क) जिन शब्दों के अंत में त्व, ना, आ, औटा, आव, आवा, औड़ा, पन इत्यादि प्रत्यय लगते हो, वे पुँलिंग होते हैं। जैसे - महत्व, पढ़ना, शौर्य, घेरा, सन्नाटा, बुढ़ापा, फैलाव, पहनावा, पकौड़ा, मित्र, बचपन, पागलपन इत्यादि।

(ख) जिन शब्दों के अंत में आई, आवट, आस, आहट, ऊया, ई, त, नी, री, ली इत्यादि प्रत्यय लगते हो, वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - मलाई, बनावट, मिठास, घबराहट, टिकिया, गरीबी, चाहत, चटनी, कोठरी, डफली इत्यादि।

(ग) संस्कृत (तत्सम) के अकारांत शब्द पुँलिंग तथा आकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - जल, स्वर्ग, भिक्षा, शिक्षा परीक्षा इत्यादि

(घ) तद्भव (हिंदी) के लिंग प्रायः तत्सम (संस्कृत) के लिंग के अनुसार होते हैं। जैसे - आश्चर्य अच्छा, संख्या - सौंख, स्वर्ण - सोना इत्यादि

(ङ) हिन्दी की द्रव्यवाचक संज्ञाएँ पुँलिंग होती हैं। जैसे - लोहा, चूना, मोती, दही, घी, तेल, सोना इत्यादि।

अपवाद - चाँदी स्त्रीलिंग है।

Scanned with CamScanner

वचन

संख्या का बोध कराने वाले शब्द वचन कहलाते हैं। जैसे - लड़का, घोड़े आदि

वचन के भेद -

(i) एकवचन - संज्ञा के जिस रूप से उसके एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे - लड़का, घर, कलम इत्यादि।

(ii) बहुवचन - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे - घोड़े, नदियाँ इत्यादि

वचन परिवर्तन के नियम -

(i) आकारान्त शब्दों के अंत में 'ए' लगाकर बहुवचन शब्द बनाते हैं। जैसे लड़का - लड़के, घोड़ा - घोड़े इत्यादि।

(ii) व्यंजनांत मूल शब्दों के अंत में 'अ' का लोप कर उसके स्थान पर 'एँ' लगाकर बहुवचन बनता है। जैसे - नहर - नहरें, रात - रातें इत्यादि

(iii) आकारान्त / उकारान्त / औकारांत वाले शब्दों में अंतिम स्वर का लोप नहीं होता है, अंतिम स्वर के बाद 'एँ' लगाते हैं। जैसे - महिला - महिलाएँ, वधू - वधुएँ इत्यादि।

(iv) ईकारान्त संज्ञा शब्दों में 'आँ' बहुवचन सूचक प्रत्यय लगाता है तो अंतिम स्वर 'ई' का ह्रस्व 'इ' हो जाता है। जैसे नारी - नारियाँ, टोपी - टोपियाँ इत्यादि।

(v) समुदाय सूचक शब्दों का प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसे - मनुष्य, जनता, भीड़, मवेशी इत्यादि

(vi) कुछ शब्दों के एकवचन एवं बहुवचन एक समान होते हैं। जैसे क्रोध, भय, दान, स्वामी, तपस्वी इत्यादि

(vii) लोग, दर्शन, प्राण, बाल, हस्ताक्षर, आँसू, समाचार सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे

(viii) छाया, प्रेम, जल, दूध, वर्षा, कृपा, आग सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं।

(ix) कुछ शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए शब्दों के अंत में 'गण' या 'वृन्द' लगाते हैं। जैसे कर्मचारीगण, शिक्षकगण, छात्रवृन्द इत्यादि।

पद -

जब वाक्य में शब्द के साथ विभक्ति लगी रहती है, उसे पद कहते हैं। अर्थात विभक्ति सहित शब्द पद कहलाते हैं। जैसे, राम पुस्तक को पढ़ता है।

पद - परिचय - पद परिचय का अर्थ होता है, पदों का अन्वय, अर्थात विश्लेषण।

वाक्य के प्रत्येक पद को अलग-अलग कर उसका स्वरूप और दूसरे पद से संबंध बताना 'पद-परिचय' कहलाता है। जैसे राम कहता है कि मैं मोहन की पुस्तकें पढ़ सकता हूँ।

Scanned with CamScanner

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उनका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। जैसे - मैंने पत्र लिखा। राम ने मोहन को पीटा।

कारक के भेद —

(i) कर्त्ता कारक - संज्ञा के जिस रूप से क्रिया करनेवाले का बोध होता है, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं। जैसे - तुमने आम खाया। इसका परसर्ग 'ने' होता है।

(ii) कर्म कारक - वाक्य में क्रिया का फल जिन शब्द पर पड़ता है, उसे कर्मकारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'को' है। जैसे - मोहन ने आम खाया।

(iii) करण कारक - जो क्रिया की सिद्धि में साधन के रूप में काम आये, उसे करण कारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'से, द्वारा' होता है। जैसे - राम ने रावण को बाण से मारा।

(iv) सम्प्रदान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को कुछ दिये जाने या किसी के लिए कुछ करने का बोध हो, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे - वह मेरे लिए पानी लाता है। इसका परसर्ग के, के लिए, वास्ते, के हेतु होता

(v) अपादान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से विरह, बिछुड़ना, दूरी, तुलना आदि का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे - पेड़ से पत्ते गिरते हैं। इसका परसर्ग 'से' होता है।

(vi) संबंध कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी एक वस्तु का अन्य वस्तु के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसका परसर्ग अर्थात चिन्ह का, की, के होता है। जैसे - मोहन की गाय।

(vii) अधिकरण कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे - छत पर लड़का बैठा है। इसका परसर्ग में, पर होता है।

(viii) सम्बोधन कारक - जिस शब्द से किसी को पुकारने या बुलाने का भाव प्रकट होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। इसका परसर्ग "हे, हो, अरे, ओ" होता है। जैसे है, राम यहाँ आओ।

निबंध —

(i) बिहार पहले और अब
(ii) छात्र और अनुशासन
(iii) समय की महत्ता
(iv) दहेज प्रथा
(v) बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
(vi) आतंकवाद
(vii) बेकारी की समस्या
(viii) वृक्षारोपण
(ix) प्रदूषण
(x) खेल का महत्त्व
(xi) साम्प्रदायिकता
(xii) बढ़ती हुई महँगाई
(xiii) नारी शिक्षा
(xiv) जनसंख्या विस्फोट
(xv) आदर्श छात्र
(xvi) युवा पीढ़ी एवं नशीला पदार्थ
(xvii) स्वच्छता

नोट — विद्यार्थीगण उपरोक्त निबंध की तैयारी अपने-अपने स्तर से करेंगे।

Scanned with CamScanner

व्याकरण (1.)

शब्द -

अक्षरों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। जैसे- घर, हवा, अग्नि इत्यादि।

उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद होते हैं-

(i) तत्सम - संस्कृत के मूल शब्द को तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे - अश्रु, अग्नि, पुष्प इत्यादि

(ii) तद्भव - संस्कृत शब्दों के बदले रूप को तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे- आँसू, कपूर आदि।

(iii) देशज - देशी भाषाओं के शब्द, देशज कहलाते हैं। जैसे- लोटा, डिबिया, आदि।

(iv) विदेशज - विदेशी भाषाओं के शब्द, विदेशज कहलाते हैं। जैसे - स्टेशन, इँजिनीयर इत्यादि।

रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं-

(i) रूढ़ शब्द - अपने-आप में पूर्ण शब्द जिसका खंड नहीं होता, रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे- घर, नाक, हाथ आदि।

(ii) यौगिक - वैसे शब्द जिनका खंड करने पर सभी खंडों का अर्थ सार्थक होता है, उसे यौगिक शब्द कहते हैं। जैसे, हिमालय, विद्यार्थी इत्यादि,

(iii) योगरूढ़ - वैसे शब्द जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर एक विशेष अर्थ बतलाते हैं, उसे योगरूढ़ शब्द कहते हैं। जैसे- पंकज, नीलकंठ, लम्बोदर इत्यादि।

रूपांतर की दृष्टि से शब्द के दो भेद होते हैं- (i) विकारी शब्द - वैसे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के अनुसार बदलते हैं, उसे विकारी शब्द कहते हैं। जैसे- गाय, वह, हम इत्यादि।

(ii) अविकारी - वैसे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, पुरुष, कारक के अनुसार नहीं बदलते हैं, उसे अविकारी शब्द कहते हैं। जैसे- धीरे-धीरे, तथा, अचानक इत्यादि।

अव्यय

जिस शब्द में किसी भी कारण से कोई परिवर्तन नहीं होता है, उसे अव्यय कहते हैं। जैसे - अभी, जब, तब इत्यादि।

अव्यय के चार भेद होते हैं -

(i) क्रिया-विशेषण - क्रिया की विशेषता बताने वाले अव्यय क्रिया-विशेषण अव्यय कहलाते हैं। जैसे - धीरे-धीरे, जल्दी, ज़ोर से इत्यादि।

(ii) संबंधबोधक - संज्ञा के बाद आकर उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्द से बतलाने वाले अव्यय संबंध बोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे - बाद, निकट, अपेक्षा, पीछे इत्यादि।

(iii) समुच्चयबोधक - एक वाक्य या शब्द का संबंध दूसरे वाक्य से बतलाने वाले अव्यय या जोड़ने वाले अव्यय समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे - इसलिए, परन्तु आदि।

(iv) विस्मयादिबोधक - जिन अव्ययों से हर्ष, शोक, आश्चर्य आदि के भाव सूचित होते हैं, परन्तु उनका संबंध वाक्य के किसी विशेष पद से नहीं होता, उसे विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे - हाय, शाबाश, वाह इत्यादि।

उपसर्ग - वैसा शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देता है उसे उपसर्ग कहते हैं। जैसे - प्र + कार = प्रकार, अनुमान आदि।

प्रत्यय - वैसा शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं, उसे प्रत्यय कहते हैं। जैसे - दिन + इक = दैनिक, मम + ता = ममता आदि।

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं -

(i) कृत प्रत्यय - धातु या क्रिया के अंत में लगने वाले प्रत्यय, कृत-प्रत्यय कहलाते हैं तथा इनसे बने शब्द कृदंत कहलाते हैं। जैसे, लिख + आई = लिखाई।

(ii) तद्धित प्रत्यय - जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत में जुड़ते हैं, उसे तद्धित प्रत्यय कहते हैं, इस प्रकार बने शब्द तद्धितांत कहलाते हैं। जैसे - लकड़ी + हारा = लकड़हारा, अपना + पन = अपनापन आदि।

Scanned with CamScanner

काल

क्रिया के उस रूप को काल कहते हैं, जिससे उसके कार्य-व्यापार का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध होता है।

काल के भेद -

वर्तमान काल - जो समय अभी बीत रहा है उसे वर्तमान काल कहते हैं। जैसे- मैं पढ़ता हूँ।

वर्तमान काल के भेद -

(i) सामान्य वर्तमान काल - क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का सामान्य रूप से सम्पन्न होने का बोध होता है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं, जैसे- वह आती है।

(ii) तात्कालिक वर्तमान - जिससे ज्ञात हो कि क्रिया वर्तमानकाल में हो रही है, उसे तात्कालिक वर्तमानकाल कहते हैं। जैसे - वह जा रहा है।

(iii) पूर्ण वर्तमान - इससे वर्तमान में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है। जैसे - वह आया है।

(iv) संदिग्ध वर्तमान - जिससे क्रिया के होने में संदेह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानता में संदेह न हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। जैसे वह पढ़ता होगा।

(v) संभाव्य वर्तमान - जिससे वर्तमानकाल में काम के पूरा होने की संभावना रहती है, उसे संभाव्य वर्तमानकाल कहते हैं। जैसे - शायद, बारिश हो।

भूतकाल - बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं। जैसे - वह गया।

भूतकाल के भेद -

(i) सामान्य भूत - जिससे भूतकाल की क्रिया के सामान्य समय का ज्ञान न हो, उसे सामान्य भूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे - मोहन आया।

(ii) आसन्न भूत - इससे क्रिया की समाप्ति निकट भूत में या तत्काल ही सूचित होती है, उसे आसन्न भूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे- मैंने खाया है।

(iii) पूर्ण भूत - क्रिया के उस रूप को पूर्ण भूत कहते हैं, जिससे क्रिया की समाप्ति के समय

Scanned with CamScanner

स्पष्ट होता है। उसे पूर्णभूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे - वह आया था।

(iv) अपूर्णभूत - इससे ज्ञात होता है कि क्रियाभूत काल में हो रही थी, लेकिन उसकी समाप्ति का पता नहीं चलता है। जैसे - गीता सो रही थी।

(v) संदिग्धभूत - इसमें यह संदेह बना रहता है कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ था या नहीं। जैसे - तुमने खाया होगा।

(vi) हेतुहेतुमद्भूत - इससे यह पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में होनेवाली थी, परन्तु किसी कारणवश नहीं हो सकी। जैसे - मैं आता तो वह जाता।

भविष्यत्काल - भविष्य में होनेवाली क्रिया को भविष्यत्काल कहते हैं। जैसे - वह आयेगा।

भविष्यत्काल के भेद -

(i) सामान्य भविष्य - इससे प्रकट होता है कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी। जैसे - मैं पढ़ूँगा।

(ii) संभाव्य भविष्य - जिससे भविष्य में किसी कार्य के होने की संभावना हो, उसे संभाव्य भविष्यकाल कहते हैं। जैसे - रमेश कल आया।

(iii) हेतुहेतुमद् भविष्य - इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता है। जैसे वर्षा होगी तो फसल अच्छे होंगे।

Scanned with CamScanner